(3)

मासिक RNI No. MPHIN/2004/13249

अक्षर वार्ता

वर्ष 18 अंक ... 2022)
Vol - XVIII ... VI
(June 202...

मूल्य 100 रुपये

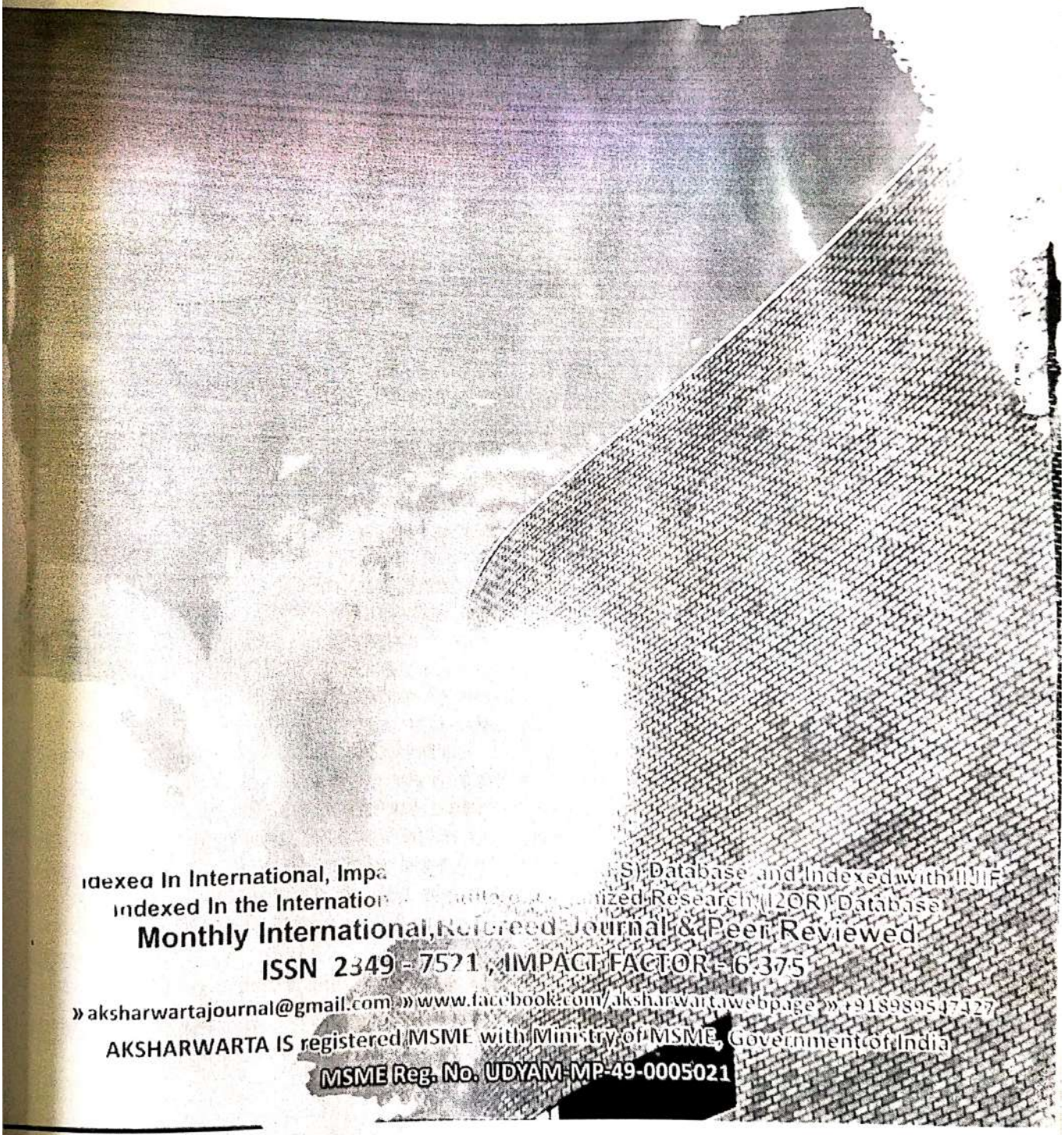

कला-मानविकी-समाज़विज्ञान-जनंसचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

Indexed In International, Impa... S) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the Internation... ...ized Research (I2OR) Database

Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 6.375

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XVIII, Issue - VIII, June - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

छायावादी कविता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना

डॉ. गौरी त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

छायावादी कविता हिंदी कविता का बहुत समृद्ध काल रहा है। इस कविता में सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है उससे हमारी राष्ट्रीय चेतना का और भी विस्तार हुआ है इसलिए राष्ट्रीय एवं संस्कृति चेतना की दृष्टि से छायावादी कविता का बहुत महत्व है। हालांकि छायावाद के आलोचकों ने उसके इस विशेषता की ज्यादातर उपेक्षा ही की है इसीलिए यह सिर्फ प्रेम कल्पना और प्रकृति कविता तक सीमित रह गई है। इस शोध पत्र में राष्ट्रीय संस्कृति चेतना का स्वरूप तथा राष्ट्रीयता के क्या मायने थे, छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना किस प्रकार व्यक्त हुई है, इन सब के विविध पक्षों का मूल्यांकन हो सकेगा। इस शोधपत्र में विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग हुआ है।

इस विषय पर अभी तक डॉ. नामवर सिंह जी का छायावाद, कविता में आधुनिक साहित्य- आचार्य नंददुलारे वाजपेई, आधुनिक हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां- डॉ नगेंद्र, हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना डॉ. विद्या नाथ गुप्ता छायावादी कवियों पर छायावादी काव्य की राष्ट्रीय चेतना पर काफी कुछ लिखा गया है।

राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसके मूल में विशिष्ट जन समूह में सचेतन रूप से एक बने रहने की आकांक्षा रहती है इस एकता के मुख्य आधार भौगोलिक एवं सांस्कृतिक होते हैं आर्थिक राजनीतिक आकांक्षाओं की एकता तथा इतिहास एवं लक्ष्य की समानता से या भावना और भी परिपुष्ट होती है। यह राष्ट्रीय चेतना और मुक्ति की कामना केवल देश के स्तर पर नहीं है बल्कि सामाजिक समस्याओं और स्त्रियों को लेकर भी थी। छायावादी कविता काव्य के लिए तो आदर्श कविता का युग रहा है लेकिन इसी समय महादेवी वर्मा भी कविता के साथ-साथ श्रृंखला की कड़ियां जैसा गद्य भी लिख रहीं थी, सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ स्त्री मुक्ति के अलग भी जगा रही थी तो छायावादी काव्य केवल एक स्तर पर नहीं बल्कि कई स्तर पर जागरण का आवाहन कर रहा था। समाज के वंचित वर्ग तथा स्त्रियों की मुक्ति की भी अभिव्यक्ति कविता में होने लगी थी।

1918 के बाद का समय राष्ट्रीय चेतना का समय रहा है और लगभग यह समय हिंदी कविता में छायावादी कविता का रहा है। छायावाद के समय तक स्वराज्य की कल्पना लगभग साफ हो गई थी भारत की जनता सामूहिक रूप से अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रयास करने लगी थी। छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना अपने उदात्त रूप में प्रस्तुत हुई है उसका एक सिरा स्वाधीनता संग्राम आंदोलन से जुड़ा है तो दूसरा मनुष्यता की कल्याण भावना से।

छायावादी कविता में समस्त के स्थान पर व्यक्ति को बहुत महत्व दिया गया है। मनुष्य ही सभी कविता के केंद्र में हैं लेकिन यह व्यक्तिवाद संकुचित बिल्कुल भी नहीं है बल्कि वह समाज की चेतना से समाहित भी है। छायावादी कविता व्यक्ति के माध्यम से ही समाज की कविता है छायावादी कविता जागरण एवं क्रांति गीत के माध्यम से ही सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करते हैं। बीती विभावरी जाग री और अरुण यह मधुमय देश हमारा जैसी कविताएं राष्ट्रीय चेतना को ही व्यक्त करती हैं।

राष्ट्रीय चेतना प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है, कोई भी बंधन हो वह मनुष्य स्वीकार नहीं करता भले ही वह सामाजिक या राष्ट्रीय स्तर का हो। रामविलास जी ने लिखा है 'छायावाद काल में लिखी हुई अपनी रचनाओं में पंत जी ने प्रकृति के आलंबनों के सहारे मानव-समाज की दुरवस्था का संकेत किया है।'[1]

जागरण का गीत गाने के लिए छायावादी कवियों ने प्रकृति को ही चुना, उगता हुआ सूरज जीवन के साथ-साथ भारत की सोई हुई पराधीनता के बाद जागने का भी प्रतीक है-

खुले पलक फैली सुवर्ण छवि
जगी सुरभि डोले मधु बाल
स्पंदन कंपन औ नवजीवन
सीखा जग ने अपनाना।[2]

यह राष्ट्रीयता का प्रश्न केवल अंग्रेजो के खिलाफ नहीं था बल्कि समाज और व्यक्ति के जीवन में फैली हुई रूढ परंपराओं के भी खिलाफ था जिनसे हम काफी निराश और परेशान थे,तो यह स्वाधीन चेतना हर उस बंधन के खिलाफ थी जिसमें व्यक्ति का अस्तित्व खत्म होकर रह जाता था। डॉ. नामवर सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां में इस बात पर विशेष बल देते हैं 'एक मोर्चा प्राचीन सामंती मर्यादाओं के विरुद्ध था और दूसरा अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध.. जहां तक साम्राज्य विरोधी मोर्चे का सवाल है इस पर छायावादी कवि ने स्पष्ट रूप से अंग्रेजों का विरोध तो नहीं किया लेकिन परोक्ष रूप से साम्राज्यवाद के विरुद्ध देश प्रेम जागरण तथा आत्म गौरव का गान गाया।'[3] छायावादी कविता देश के तत्कालीन वर्तमान संघर्षों के सभी पक्षों का चित्रण करती है फिर चाहे वह निराला की कविता हो या महादेवी वर्मा की गीत हों इन सब में मनुष्य की व्यापकता और उसके सपनों को विशेष महत्व दिया गया है इन सब को चित्रित करने के लिए कहीं कहीं इतिहास का भी सहारा लिया गया है उदाहरण के लिए जयशंकर प्रसाद की कविता में यह ऐतिहासिकता वर्तमान परिदृश्य को सुधारने के लिए काम आती है लगभग सभी छायावादी कवियों में समाज की सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं की शर्त होती संस्कृति को अपनी कविताओं में स्थान दिया है और यह उम्मीद

Scanned with OKEN Scanner